दादी की दादी



अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

चित्रांकन

सौम्या शुक्ला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

अनुक्रम



ISBN 978-81-237-9128-9

पहला ईप्रिंट संस्करण : 2020

Dadi Ki Dadi *(Hindi Original)*

₹ 40.00

ईप्रिंट द्रवारा ऑर्नट टेक्नो सविसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

www.nbtindia.gov.in

usg: cky iqLrdky;



दादी की दादी

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

चित्रांकन : **सौम्या शुक्ला**

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

दादी का चश्मा

एकता एक दिन शाम को स्कूल से लौटी तो देखा कि उसकी दादी आँखों पर चश्मा लगाए बैठी अखबार पढ़ रही थीं।

"ये क्या दादी......यह चश्मा कहाँ से ले आईं? अरे वाह, कितना सुंदर दिख रहा है यह।" एकता ने स्कूल बैग एक तरफ फेंका, भागकर दादी के पास गई और उनकी नाक पर चढ़ा चश्मा उतारने लगी।

"अरी रुक...रुक...रुक। चल परे हट। ऐसे खींचेगी तो इसकी कमानी टूट जाएगी और अगर नीचे गिर गया तो शीशा भी टूट जाएगा।" दादी अपना सर पीछे की ओर हटाकर एकता की पकड़ से चश्मे को बचाते हुए बोलीं।

"दादी प्लीज, दीजिए ना.....जरा मैं भी चश्मा पहनकर देखूँ कि कैसा लगता है। प्लीज दादी.....।" एकता दादी का चश्मा लेने के लिए जिद करने लगी।

"नहीं, बच्चे चश्मा नहीं पहनते हैं। चश्मा पहनेगी तो तेरी आँखें खराब हो जाएँगी।" दादी ने कहा।

"तो फिर आपने क्यों पहना है?" एकता ने पलटकर प्रश्न कर दिया।

"अरे, तो मैं कोई बच्ची हूँ क्या। देखती नहीं कि मेरे बाल पक गए हैं, बूढ़ी हो गई हूँ। मेरी आँखें कमजोर हो गई हैं, इसलिए आज डॉक्टर को दिखलाकर चश्मा ले आई हूँ।"

"झूठ। आपकी बड़ी-बड़ी आँखें इतनी अच्छी तो दिख रही हैं और आप झूठ-मूठ में कह रही हैं कि आँखें कमजोर हो गई हैं।"



“अरी पागल, आँखों की कमजोरी कोई बाहर से थोड़े न दिखती है।”

“तो, तो फिर आपको कैसे पता चला कि आपकी आँखें कमजोर हो गई हैं।”

“आँखें भीतर से कमजोर होती हैं। आँखें कमजोर होती हैं तो सारी चीजें धुँधली-सी दिखने लगती हैं। अखबार या किताब पढ़ने पर आँखों में कड़वाहट-सी होने लगती है। देर तक पढ़ो तो सिर में भी दर्द होने लगता है। पिछले कई दिनों से मुझको भी अखबार पढ़ने में परेशानी हो रही थी तो मैं समझ गई कि मेरी आँखें कमजोर हो रही हैं। आज डॉक्टर के पास गई तो उसने आँखों की जाँच करके चश्मा दे दिया।” दादी ने बताया।



“लेकिन आपकी आँखें आखिर कमजोर हुई क्यों?”

“अरी मेरी दादी, तुम तो वकीलों की तरह जिरह करने लगती हो। होता यह है कि बुढ़ापे में सभी की आँखें कमजोर हो जाती हैं। इसीलिए सभी बूढ़े, बूढ़ियों को चश्मा पहनना पड़ता है। जब तुम्हारी मम्मी और पापा बूढ़े हो जाएँगे तो उनको भी चश्मा पहनना पड़ेगा। समझी? अब चलो, स्कूल के कपड़े उतारो और खाना-पीना करो।” दादी ने एकता की पीठ पर प्यार से धौल जमाते हुए कहा।

स्कूल गई एकता के मन में अगले सारे दिन दादी का सुनहरे फ्रेम वाला चश्मा ही घूमता रहा। गणित के पीरियड में जब टीचर पढ़ाने आईं तो उनको देखकर एकता को अचानक ध्यान आया कि अरे, उसकी गणित की टीचर भी तो चश्मा पहनती हैं, लेकिन वह तो बुढ़िया नहीं हैं। उनके बाल भी नहीं पके हैं। इसका मतलब है कि दादी ने झूठ बोला था। बस फिर क्या था। घर लौटते ही एकता ने दादी को घेरा और सवाल-जवाब करने लगी–“वाह दादी, आपने कल मुझको खूब बुद्धू बनाया था। आपने तो कहा था कि बूढ़े लोग चश्मा पहनते हैं, लेकिन मेरी गणित की टीचर तो बूढ़ी नहीं हैं। फिर वह क्यों चश्मा पहनती हैं? अब बताइए।”







"अरे तो इसमें बुद्धू बनाने की क्या बात है? तुम्हारी टीचर की भी आँखें कमजोर हो गई होंगी, इसलिए वह चश्मा पहनती होंगी।" दादी ने कहा।



"देखिए, मुझको बहकाइए मत दादी। कल आपने कहा था कि बूढ़े लोगों की आँखें कमजोर हो जाती हैं। फिर मेरी टीचर की आँखें कैसे कमजोर हो सकती हैं? वह तो बूढ़ी नहीं हैं। उनके तो सारे बाल भी काले हैं।"

"अरी मेरी दादी अम्मा, तुमसे जीत पाना तो सचमुच बहुत मुश्किल काम है। अरे बाबा, बीमारी कोई उम्र देखकर थोड़े न आती है। आँखें कमजोर होने के कई दूसरे कारण भी तो होते हैं। आँखों में चोट लगने या बहुत ज्यादा टी.वी. देखने या देर तक मोबाइल और लैपटाप पर काम करने या शरीर के अंदर विटामिन 'ए' की कमी होने के कारण कम उम्र में भी आँखें कमजोर हो सकती हैं। समझी?" दादी बोलीं।

"अच्छा.....तो अब समझ में आया कि पढ़ते समय मेरी आँखों और सिर में दर्द क्यों होने लगता है। दादी, ऐसा लगता है कि मेरी भी आँखें कमजोर हो गई हैं। मुझको भी न सारी चीजें धुँघली-धुँधली सी दिखती हैं।" एकता ने इतने भोलेपन से कहा कि दादी की हँसी छूट गई।

"इसीलिए तो तुमसे कहती हूँ मैं कि रोज सुबह-शाम दूध पिया करो और हरी सब्जियाँ खाया करो। गाजर, टमाटर, पपीता और संतरा खाया करो। इन सब में विटामिन 'ए' होता है। लेकिन तुमको तो दूध, फल और हरी सब्जी के नाम से ही चिढ़ है। दूध पीने को कहो तो तेरी नानी मरने लगती है। फिर तो आँखें कमजोर होंगी ही।" दादी बोलीं।



"नहीं दादी, अब मुझको भी चश्मा पहनना पड़ेगा। ऐसा है कि कल से जब मैं स्कूल जाऊँगी तो आप अपना चश्मा मुझको दे दिया करिएगा। मैं स्कूल से लौटकर वापस कर दूँगी। आप अखबार शाम को पढ़ लीजिएगा।"

"नहीं, तुमको चश्मा-वश्मा नहीं मिलेगा। तुम आज से ही रोज सवेरे, शाम दूध पीना शुरू कर दो। फल और हरी सब्जी खाना शुरू कर दो। थोड़े अंकुरित चने भी खाया करो। तुम्हारी आँखें एकदम ठीक हो जाएँगी। समझी?" दादी ने कहा।

सच्ची बात तो यह थी कि एकता का मन दादी का चश्मा पहनने के लिए ललचा रहा था। उसने कई बार माँगा, लेकिन दादी ने उसे चश्मा देने से साफ मना कर दिया। दादी हमेशा सावधान रहती थीं कि उनका चश्मा एकता के हाथ में न पड़ने पाए। वह जानती थीं कि चश्मे का एकता के हाथ में जाने का मतलब है उसका टूटना। इसलिए वह चश्मा को डब्बे में डालकर आलमारी के सबसे ऊपर वाले खाने में रख देती थीं ताकि एकता उसे पा न सके।



जब बार-बार माँगने के बाद भी दादी ने अपना चश्मा नहीं दिया तो एकता के मन में शरारत सूझी। एक दिन सवेरे स्कूल जाते समय वह कमरे के दूसरे कोने में रखे स्टूल को खींचकर आलमारी के पास ले आई। स्टूल पर चढ़कर उसने आलमारी में से दादी का चश्मा निकाला और चुपचाप अपने बस्ते में रखकर स्कूल चली गई।

उस दिन एकता बहुत खुश थी। उसने सोच रखा था कि आज कक्षा में वह चश्मा लगाकर बैठेगी और अपनी सभी सहेलियों पर रोब जमाएगी। स्कूल के गेट पर रिक्शे से उतरने के बाद उसने बैग से चश्मा निकाला और अपनी आँखों पर चढ़ा लिया। बड़ा होने के कारण चश्मा उसकी नाक पर रुक नहीं रहा था तो उसने बायें हाथ से उसको पकड़ लिया। लेकिन यह क्या, चश्मा पहनते ही उसको सब कुछ बड़ा-बड़ा और टेढ़ा-मेढ़ा सा दिखने लगा। उसने नीचे की ओर देखा तो जमीन भी ऊँची-नीची दिखने लगी। एक हाथ से चश्मे को पकड़े, दायें, बायें देखती वह आगे बढ़ी। लेकिन अभी दो कदम ही आगे चली थी कि मुँह के बल धड़ाम से गिर पड़ी। उसका बस्ता एक तरफ और चश्मा छिटककर दूसरी तरफ जा गिरा। कपड़े भी गंदे हो गए। कंधे और घुटने में चोट लगी सो अलग। वह घुटना सहलाते, कपड़ों की धूल झाड़ते हुए खड़ी हुई और एक तरफ गिरे चश्मे को जल्दी से उठाया। गनीमत थी कि चश्मा टूटा नहीं था। चश्मे को मोड़कर उसने बैग में रखा और अपने कान पकड़े कि अब दोबारा चश्मा नहीं पहनेगी।



दादी की दवाई



रोज की तरह ही नहाने, पूजा करने और नाश्ता करने के बाद एकता की दादी दवाइयाँ खाने के लिए अपने कमरे में गईं। देखा तो उनकी खाँसी की दवाई यानी कफ सीरप की शीशी अपनी जगह पर नहीं थी। उन्होंने बिस्तर पर, मेज के नीचे, तथा चारपाई के नीचे सभी जगह देख लिया, लेकिन कफ सीरप की शीशी कहीं नहीं मिली। एकता की दादी की सारी दवाइयाँ उनकी चारपाई के सिरहाने की ओर एक छोटी-सी मेज पर रखी रहती हैं। वहीं सवेरे, दोपहर, शाम और रात चारों टाइम वह खुद से लेकर अपनी दवाइयाँ खाती रहती हैं।

"बहू, मेरी खाँसी वाली दवाई कहाँ गई?" अपने कमरे से ही दादी ने एकता की मम्मी को आवाज लगाई। एकता की मम्मी भागी-भागी आईं। उन्होंने भी सब जगह ढूँढ़ा, लेकिन कफ सीरप की शीशी कहीं नहीं दिखी।

"माँ जी, कफ सीरप की शीशी आप कहीं कमरे से बाहर तो नहीं ले गई थीं?" एकता की मम्मी ने पूछा।

"नहीं बहू, मैं कभी कोई भी दवाई यहाँ से नहीं हटाती हूँ।" दादी बोलीं।

"इतनी बड़ी शीशी तो चूहा भी नहीं ले जा सकता। मैंने सब जगह ढूँढ़ लिया। शीशी आखिर गई कहाँ?" एकता की मम्मी ने परेशान होते हुए कहा।

"जाने दो बहू.....परेशान न हो। दूसरी शीशी मँगवा लेना। वैसे भी उसमें बस दो-तीन चम्मच दवाई ही बची थी।" दादी ने कहा।

उसी दिन शाम को एकता के पापा दादी के लिए कफ सीरप की दूसरी शीशी खरीदकर ले आए। दादी ने रात में सोने से पहले दवाई पी और सो गईं। अगले दिन सवेरे जब नहा-धो, पूजा-पाठ और नाश्ता करने के बाद वह अपने कमरे में गईं तो दवा की शीशी फिर गायब मिली। इधर-उधर खोजने के बाद उन्होंने एकता की मम्मी को बुलाया। दोनों लोग ढूँढ़-ढूँढ़ कर हार गईं, लेकिन कफ सीरप की शीशी कहीं नहीं मिली।

"बहुत आश्चर्य की बात है। दवा की शीशी आखिर गई तो कहाँ गई। कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे रेनू उठा ले गई हो।" दादी ने घर में झाड़ू-पोंछा और बरतन धोने का काम करने वाली लड़की रेनू पर शक जाहिर किया।

"अरे नहीं माँ जी, वह ऐसा नहीं कर सकती। इतने साल हो गए हमारे यहाँ काम करते, उसने आज तक कभी कोई चीज नहीं छुई है। उस पर शक करना गलत है।" एकता की मम्मी ने कहा।



"तो फिर कोई भूत-प्रेत उठा ले गया क्या? कोई सूई जैसी छोटी चीज तो है नहीं कि खो जाएगी। इतनी बड़ी, दवा से भरी शीशी अपने आप तो उड़कर कहीं चली नहीं जाएगी।" दादी थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए बोलीं।

"माँ जी, वही तो मैं भी सोच रही हूँ कि आखिर रातभर में शीशी कहाँ चली गई। कोई खाने-पीने की चीज होती तो एक बार सोचती कि एकता ने चुपके से खा लिया होगा।" मम्मी बोलीं।

बातचीत में लगीं एकता की मम्मी और दादी ने देखा ही नहीं कि प्रेस करने के लिए कपड़े लेने आया रमेश धोबी जाने कब से दरवाजे पर खड़ा उनकी बातें सुन रहा था। कॉलोनी के बाहर सड़क किनारे कोने में शंकर भगवान का एक छोटा-सा मंदिर है। रमेश उसी मंदिर के पास नीम के पेड़ के नीचे प्रेस की ठेली लगाता है और कॉलोनी के घरों से कपड़े ले जाकर प्रेस करता है।

"क्या हुआ चाची जी.....कुछ खो गया है क्या?" रमेश ने एकता की मम्मी से पूछा।

"अरे बेटा, मेरी खाँसी की दवाई नहीं मिल रही है। कल शाम को ही नई शीशी खरीदकर मँगाई थी। रात में सोते समय दो चम्मच पीकर यहीं, इसी मेज पर रख दी थी। सवेरे देख रही हूँ तो गायब है। पता नहीं कहाँ चली गई।" दादी ने बताया।



"दवा की शीशी? वो तो मैंने आज सवेरे एकता बिटिया को मंदिर की सीढ़ियों के पास बैठने वाले बूढ़े भिखारी को देते देखा था।" रमेश एकदम से बोल पड़ा।

एकता के स्कूल की बस मंदिर के पास ही आकर रुकती है। एकता सवेरे तैयार होकर मंदिर के पास जाकर खड़ी हो जाती है। वह वहीं से बस में बैठती है और शाम के समय वहीं उतरकर घर आ जाती है।

"क्या.....सच कह रहे हो तुम?" रमेश की बात सुनी तो एकता की मम्मी ने चौंककर पूछा।

"हाँ चाची जी, मैंने खुद अपनी आँखों से देखा था। एकता ने कल सवेरे भी उस भिखारी को एक शीशी पकड़ाई थी और एक शीशी उसे आज भी दी थी।" रमेश ने जब दोबारा कहा तो दादी की दवाई (कफ सीरप) के चोर का पता चल गया।

एकता शाम के समय स्कूल से लौटी तो किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। जब वह कपड़े बदलकर, हाथ-मुँह धोकर खाना खा चुकी तब मम्मी ने उसको दादी के कमरे में बुलाया और पूछा—"एकता, दादी की खाँसी की सीरप चुराकर मंदिर के पास बैठे भिखारी को क्यों दी तुमने?"

सुनते ही एकता एकदम से सकपका गई और सिर झुकाए चुपचाप खड़ी हो गई। वह समझ गई कि मम्मी और दादी को सारी बातें पता चल चुकी हैं। अब उसे जरूर मम्मी की डाँट और मार पड़ेगी।

"अरी, तू बोलती क्यों नहीं? हमें पता है कि दो दिनों में दादी की खाँसी के सीरप की दो शीशियाँ चुराकर तुमने उस भिखारी को दी हैं। बोल, ऐसा काम क्यों किया तुमने?" मम्मी ने डाँटकर पूछा।





"मम्मी, मैं रोज देखती थी मंदिर के पास बैठा वह सफेद दाढ़ी वाला बाबा कई दिनों से खाँसता रहता था। मैंने सोचा उसके पास दवाई खरीदने के लिए पैसा नहीं होगा। इसलिए दादी की खाँसी की दवाई उसको दे दी थी।" डरी, सहमी एकता ने कहा और मार खाने के डर से सुबकने लगी।

एकता का जवाब सुनकर तथा उसकी घबड़ाहट और रोनी सूरत देखकर दादी और मम्मी दोनों एक साथ हँस पड़ीं।

"अरी पगली तो इसके लिए तुझे चोरी करने की क्या जरूरत थी। अगर मुझको बताया होता तो मैं वैसे ही उस गरीब के लिए दवाई मँगवा देती। चलो, कोई बात नहीं। गरीब भिखारी को दवा की शीशी देकर बहुत नेक काम किया है तुमने। लेकिन चोरी करना गलत बात है।" दादी ने कहा और एकता को अपनी गोद में खींचकर दुलराने लगीं।



दादी की दादी



स्कूल से लौटी एकता गेट के अंदर घुसते ही दौड़कर अपनी दादी से लिपट गई। दादी उस समय घर के बाहर छोटे-से लॉन में कुर्सी डाले बैठी कोई किताब पढ़ रही थीं।

"क्या बात है आज मेरी रानी बिटिया बहुत खुश नजर आ रही है।" एकता को देखते ही दादी ने हाथ में पकड़ी किताब सामने स्टूल पर रख दी और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोलीं।

"अब मजा आएगा दादी, आज के बाद बड़े दिन की छुट्टियाँ हो गईं। पूरे दस दिनों के लिए स्कूल बंद। अब रोज रात में एक नई कहानी सुनानी पड़ेगी आपको।" एकता ने चहकते हुए बताया।

"क्यों, छुट्टियों के लिए तुमको होमवर्क नहीं मिला है क्या स्कूल से?" दादी ने पूछा।

"मिला है न, होमवर्क भी मिला है, लेकिन उससे क्या हुआ। मेरे पास सारा दिन भी तो रहेगा। मैं दिन में होमवर्क कर लिया करूँगी और रात में आप से कहानी..... ।"

"अच्छा चल, पहले हाथ-मुँह धो ले, कुछ खा-पी ले फिर बैठकर बातें करेंगे।" दादी ने कहा और एकता को लेकर घर के अंदर चली गईं।

और दिनों तो एकता स्कूल से लौटने के बाद खा-पीकर अपना होमवर्क पूरा करने बैठ जाती थी, लेकिन आज सारे दिन वह दादी के आस-पास ही मँडराती रही और बड़-बड़-बड़-बड़, बड़-बड़-बड़-बड़ अपने टीचर, अपनी सहेलियों तथा अपने स्कूल की तमाम बातें बताती रही।



दादी भी मग्न हो उसकी बे सिर-पैर की बातें सुनती और हुँकारी भरती रहीं। रात का खाना खाने के बाद वह दादी के पास उनकी रजाई में घुस गई।

"दादी जी, चलिए अब कोई मजेदार कहानी सुनाइए फटाफट।" एकता ने दादी से फरमाइश की।

"कहानी....? अरी अब तो तू इत्ती बड़ी हो गई है......बड़े बच्चे कहीं कहानी सुनते हैं क्या?" दादी बोलीं।

"नहीं दादी, यह सब बहाना नहीं चलेगा। कहानी तो आप को सुनानी ही पड़ेगी।" सीधी लेटी दादी का मुँह अपनी तरफ घुमाकर एकता ने जिद की।

"अच्छा चल आज तुझे मैं सूरज और चंद्रमा की कहानी सुनाती हूँ। यह जो दिन में चमकता है न, वह सूरज और रात में चमकने वाला चंद्रमा दोनों सगे भाई हैं। ये दोनों जब छोटे थे तो अपनी अकेली माँ के साथ रहते थे। एक बार की बात है, उन्हें कहीं दावत खाने का निमंत्रण मिला। दोनों भाई जब दावत खाने के लिए घर से निकलने लगे.......।"

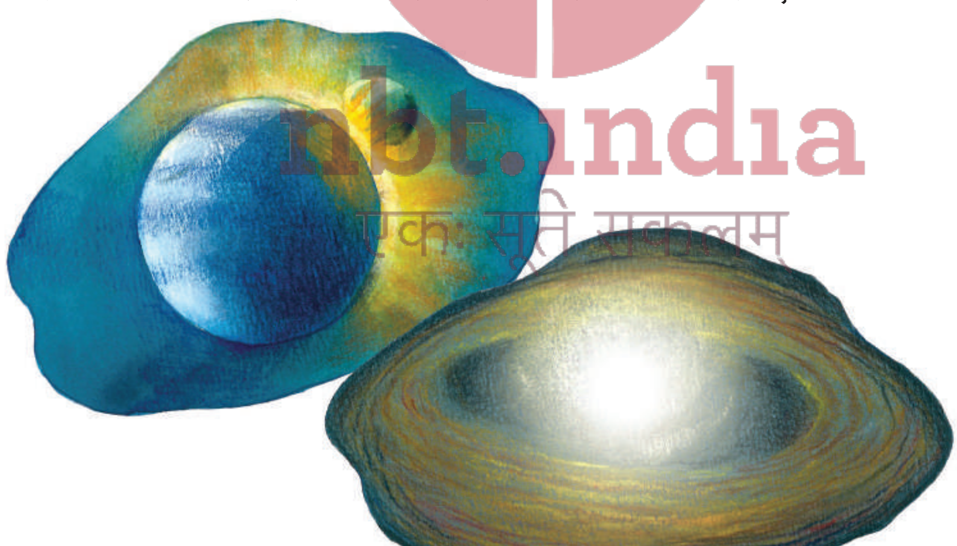
"गलत....दादी बिलकुल गलत। सूरज और चंद्रमा कोई आदमी थोड़े न हैं जो भाई-भाई होंगे और दावत खाने जाएँगे। यह सूरज तो एक तारा है। हमारी धरती इसके चारों तरफ घूमती है। और चंद्रमा हमारी धरती का एक उपग्रह है जो धरती के चारों ओर घूमता रहता है। सूरज और चंद्रमा दोनों ही तरह-तरह की गैसों तथा धूल, मिट्टी से बने गोले हैं। इनमें कोई जान थोड़े न है।" कहानी सुना रही दादी की बात बीच में ही काटकर एकता बोल पड़ी।

"ऐसा नहीं कहते बेटी। सूरज और चंद्रमा दोनों ही हमारे देवता हैं। इनकी पूजा की जाती है। तू देखती नहीं, मैं रोज सवेरे नहाने के बाद सूरज देवता को जल चढ़ाती हूँ। इन दोनों देवताओं के ही नाम पर रविवार और सोमवार के दिन बनाए गए हैं।" दादी ने कहा।

"इसका मतलब दादी आप कुछ नहीं जानतीं। सुनिए मैं बताती हूँ।" एकता ने बताना शुरू किया—"अब से कई हजार करोड़ साल पहले अंतरिक्ष में कई प्रकार के गैसों के मिलने से एक बहुत जोरदार धमाका हुआ था। उस धमाके से आग का एक बहुत बड़ा गोला बना। इसी गोले को 'सूरज' कहा जाता है। धमाके के कारण सूरज के चारों ओर धूल के कण फैल गए। फिर क्या हुआ कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण धूल के कण आपस में जुड़कर पत्थर बन गए। और इस प्रकार हमारी पृथ्वी तथा इसी तरह के ढेर सारे दूसरे ग्रह बने।"

"देख बिटिया, सूरज के बारे में तो मुझको नहीं पता, लेकिन चंद्रमा तो समुद्र मंथन से निकला था। हमारे पुराणों में लिखा है कि अमृत की तलाश के लिए देवताओं तथा राक्षसों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया था। जैसे मथानी से दही को मथा जाता है न, ठीक उसी तरह मंदराचल पर्वत को मथानी तथा शेषनाग को रस्सी बनाकर देवताओं और राक्षसों ने समुद्र को मथा था। उस मंथन में समुद्र के अंदर से कुल चौदह प्रकार के रत्न निकले थे जिसमें एक चंद्रमा था।" दादी ने कहा।

"नहीं दादी यह बात भी गलत है। मैं बताती हूँ कि चंद्रमा कैसे बना। हमारी धरती के जैसे ही ढेर सारे छोटे-बड़े ग्रह सूरज के चारों तरफ तेजी से चक्कर लगा रहे थे। फिर क्या हुआ कि चक्कर लगाते-लगाते 'थिया' नाम का एक बड़ा-सा ग्रह बहुत तेजी से आकर धरती से टकरा गया। उस टक्कर से धरती का एक हिस्सा टूटकर उससे अलग हो गया। धरती से टूटा यही हिस्सा चंद्रमा बन गया और धरती के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।" एकता ने बताया।





"अरी मेरी गुड़िया, तू तो बिलकुल नई और अनोखी बातें बता रही है रे। लेकिन ये सब बातें तुमने जानी कहाँ से?" आश्चर्य से भरी दादी ने पूछा।

"यह सब मेरी विज्ञान की किताब में लिखा है न दादी। वहीं से तो पढ़ा है मैंने। अच्छा चलिए, छोड़िए इस बात को। अब कोई दूसरी कहानी सुनाइए।" एकता बोली।

"तो चलो तुमको सोनपरी की कहानी सुनाती हूँ। बड़ी-बड़ी नीली आँखों, चाँदी के जैसे चमचमाते लंबे बालों तथा सुनहले पंखों वाली एक सुंदर-सी परी थी जिसका नाम था 'सोनपरी'। वह परीलोक में रहती थी।"

"दादी यह परीलोक कहाँ है?" दादी ने अभी कहानी शुरू ही की थी कि एकता पूछ बैठी।

"परीलोक? आसमान के उस पार, बहुत दूर, एक हरी-भरी, तरह-तरह के फूलों के पौधों, फलदार पेड़ों, मुलायम घास के मैदानों तथा मीठे पानी के झरनों वाली सुंदर-सी जगह है जहाँ परियाँ रहती हैं। परियों के उस देश को परीलोक कहते हैं।" दादी ने बताया।

"नहीं दादी, यह भी गलत है। अभी तक तो इस धरती के अलावा किसी भी दूसरे ऐसे ग्रह के बारे में पता नहीं चल सका है जहाँ जीवन हो। वैज्ञानिक लोग अंतरिक्ष में तथा चंद्रमा और मंगल, बुध ग्रहों पर भी जा चुके हैं। अगर सचमुच में कहीं परीलोक जैसी कोई जगह होती तो वैज्ञानिकों को पता तो चल ही गया होता।" एकता ने कहा।

"तो इसका मतलब यह है कि परीलोक और परियों के बारे में जो कहानियाँ हम अपने बचपन से ही सुनते चले आ रहे हैं वो सारी बातें और कहानियाँ गलत है। क्यों?" दादी ने पूछा।

"हाँ दादी, एक बार अखबार में भी छपा था कि परी जैसी कोई चीज नहीं होती.....यह परियों की बातें सिर्फ आदमी के मन की कल्पना है। चलिए इसे भी छोड़िए....आप कोई सच्ची-मुच्ची की कहानी सुनाइए।"





"सच्ची-मुच्ची की कहानी? अच्छा चलो तुमको एक जादूगर की कहानी सुनाती हूँ। कहानी नहीं, बल्कि अपनी आँखों से देखी सच्ची बात बताती हूँ। कई साल पहले हमारे गाँव के कार्तिक के मेले में एक जादूगर आया था। वह अपने मुँह से आग उगलता था, हवा में हाथ घुमाकर कोई भी चीज मँगा लेता था और देखते-ही-देखते किसी भी चीज को हवा में गायब कर देता था।"

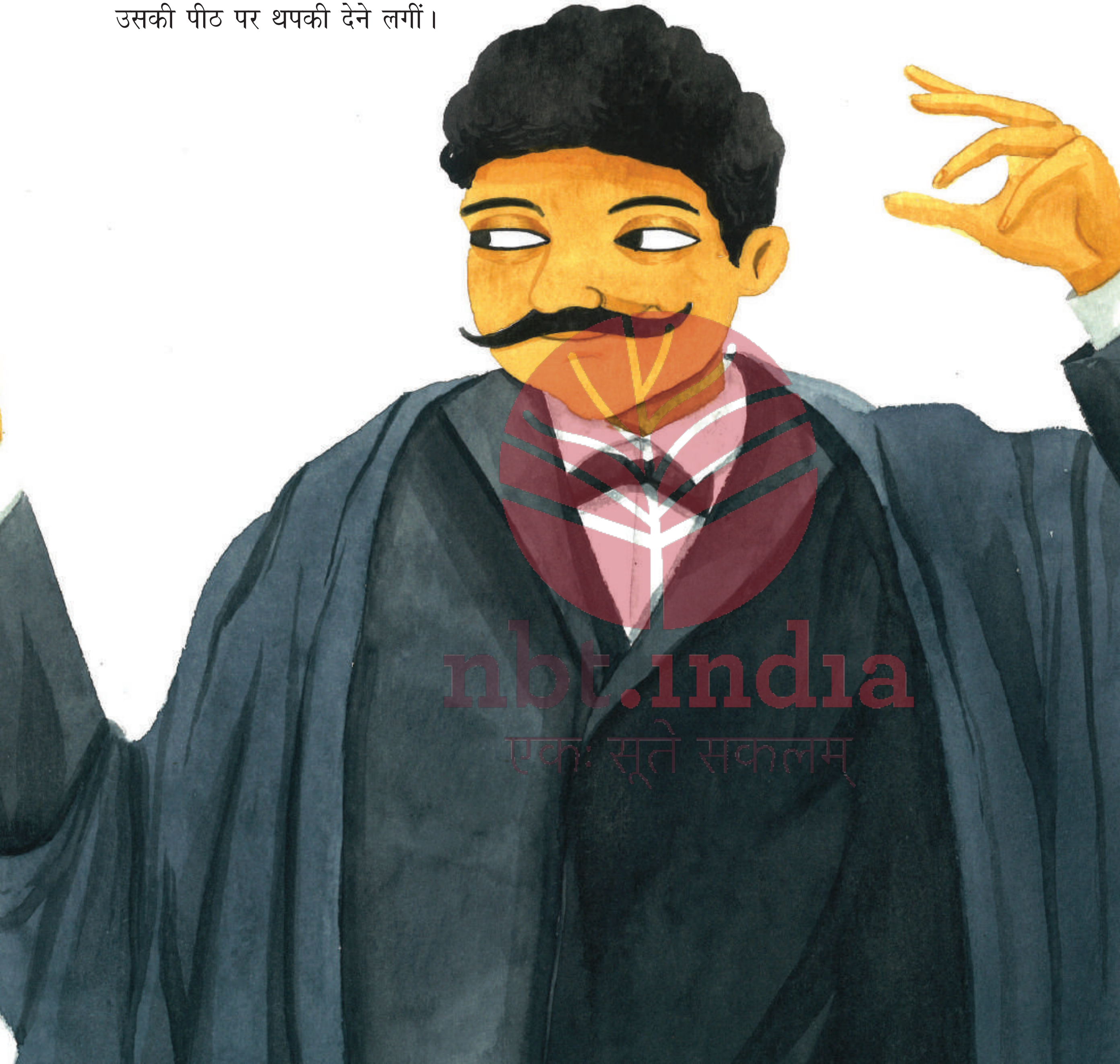
"अरी दादी, यह जादू-वादू कुछ नहीं होता.... इसमें बस थोड़ा-सा विज्ञान और थोड़ी-सी हाथ की सफाई होती है। एक दिन मेरे स्कूल में भी एक जादूगर आया था। पहले तो उसने कई तरह के जादू दिखाए, फिर खुद ही बताया कि उसको कोई जादू-मंतर नहीं आता है। उसने जो भी दिखाया है वह सब हाथ की सफाई है। जानती हैं दादी, उसने भी अपने मुँह से आग उगली थी।

बाद में खुद बताया कि फास्फोरस को मुँह में रखने के बाद बाहर थूक देने से वह जल उठता है। और देखने वालों को लगता है कि जादूगर अपने मुँह से आग उगल रहा है। इसी तरह उसने सबके सामने एक हड्डी रखी और मंत्र फूँककर उसके ऊपर पानी डाला तो हड्डी से धुआँ निकलने लगा। सभी लोग



समझे कि इसमें कोई जादू है। लेकिन बाद में जादूगर ने खुद बताया कि उसने हड्डी पर पहले से ही फास्फोरस का लेप लगाकर सुखा दिया था। फास्फोरस पर पानी पड़ा तो वह जल उठा और धुआँ निकलने लगा।"

"अरे बाप रे, तू तो मेरी भी दादी निकली। जाने कितनी नई-नई बातें बता दीं तुमने मुझको। अच्छा चलो अब सो जाओ। कल से तुम मेरी दादी और मैं तुम्हारी पोती। तुम कहानी सुनाना और मैं सुनूँगी। ठीक?" दादी ने हँसते हुए कहा और एकता को सीने से चिपकाकर उसकी पीठ पर थपकी देने लगीं।



दादी की बीमारी

एकता की दादी की तबीयत पिछले कई दिनों से खराब चल रही थी। उनको लगातार खाँसी आ रही थी, बेचैनी-सी हो रही थी और साँस लेने में भी बहुत परेशानी हो रही थी। एकता के पापा उनको डॉक्टर को दिखलाकर दवाइयाँ ले आए थे। दादी दवाइयाँ खाकर चुपचाप अपने कमरे में पड़ी रहती थीं। एक दिन सवेरे स्कूल जाते समय एकता ने सुना कि दादी उसके पापा से कह रही थीं—"बेटा, तुम अपने ऑफिस से दो दिनों की छुट्टी लेकर मुझको गाँव पहुँचा आओ। गाँव जाकर मैं बिना दवाई के ही ठीक हो जाऊँगी।"



"नहीं अम्मा, आप परेशान न हों। डॉक्टर ने कहा है कि तीन-चार दिनों में आप बिलकुल ठीक हो जाएँगी।" एकता के पापा दादी को समझा रहे थे।

उस समय तो स्कूल जाने की जल्दी में एकता ने कुछ नहीं पूछा, लेकिन स्कूल से वापस आते ही दादी के पास गई और पूछ बैठी—"दादी, आप गाँव क्यों जाना चाहती हैं? मैंने सुना था आज सवेरे आप पापा से गाँव जाने के लिए कह रही थीं।"



"हाँ, अब यहाँ इस शहर में रहने का मन नहीं है मेरा। अपने गाँव जाना चाहती हूँ मैं।" दादी ने कहा।

"क्यों दादी, यहाँ पर क्या परेशानी है आपको?" एकता ने रूआँसी होकर पूछा।

"देखती नहीं तू कि मैं बार-बार बीमार पड़ जा रही हूँ। यहाँ शहर की हवा में जहर घुल गया है। साँस लेना भी कठिन हो गया है यहाँ पर।" दादी बोलीं।

"हवा में कोई चीज कैसे घुल सकती है दादी? हवा कोई पानी थोड़े न है कि उसको गिलास या कटोरे में लिया और उसमें कोई चीज डालकर घोल लिया। हवा तो हमें दिखती भी नहीं है।" एकता ने ऐसे भोलेपन से कहा कि सुनकर दादी हँस पड़ीं।

"अरी पागल, हवा में जहर घुलने का मतलब यह है कि यहाँ की हवा जिसमें हम साँस लेते हैं, जहरीली यानी प्रदूषित हो गई है। अच्छा चल, मैं तुमको समझाती हूँ। इतना तो तुमको पता ही होगा कि हमें जिंदा रहने के लिए शुद्ध हवा यानी कि ऑक्सीजन की जरूरत होती है।" दादी ने कहा।

"हाँ दादी, यह तो पढ़ा है मैंने कि आदमी हो या जानवर हर किसी को जिंदा रहने के लिए ऑक्सीजन गैस की जरूरत होती है। हम जब साँस लेते हैं तो शुद्ध हवा यानी ऑक्सीजन अपने अंदर खींचते हैं और जब साँस छोड़ते हैं तो अशुद्ध हवा यानी कार्बन डाइऑक्साइड को बाहर निकालते हैं।" एकता बोली।

"अच्छा अब यह बता कि अगर वातावरण की सारी हवा अशुद्ध हो जाए और साँस लेने के लिए हमें शुद्ध हवा न मिले तब क्या होगा? क्या सभी बीमार नहीं पड़ जाएँगे?"

"नहीं दादी, ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि हम साँस के साथ जो अशुद्ध हवा यानी कार्बन डाइऑक्साइड बाहर छोड़ते हैं, उसको पेड़-पौधे फिर से शुद्ध करके ऑक्सीजन में बदल देते हैं। इस तरह से अशुद्ध हवा लगातार शुद्ध होती रहती है।"

"हाँ, तुम्हारी बात सही है कि पेड़-पौधे अपना भोजन बनाने की प्रक्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड को सोखते हैं और अशुद्ध हवा को शुद्ध कर देते हैं। लेकिन यह तो सोचो कि जब धरती पर पेड़-पौधे ही नहीं बचेंगे तो फिर कौन शुद्ध करेगा अशुद्ध हवा को?" दादी ने कहा।

"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है दादी कि इस धरती से सारे के सारे पेड़-पौधे ही खत्म हो जाएँगे।"

"क्यों नहीं हो सकता ऐसा? चारों तरफ नई-नई सड़कें बन रही हैं, पतली सड़कों को चौड़ा किया जा रहा है, बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ लग रही हैं, जिधर देखो उधर नई कालोनियाँ बस रही हैं, इमारतें बन रही हैं। इन सारे कामों के लिए रोज हजारों पेड़ काट दिए जाते हैं कि नहीं? इस तरह धीरे-धीरे करके एक दिन सारे पेड़ खत्म नहीं हो जाएँगे?" दादी ने कहा।

"लेकिन दादी जी, अगर पुराने पेड़ काटे जा रहे हैं तो उनकी जगह नए पेड़ लगाए भी तो जा रहे हैं। तो फिर पेड़ खत्म कैसे हो सकते हैं?" एकता बोली।





"हाँ बेटी, कहने के लिए तो नए पेड़ लगाए जा रहे हैं, लेकिन उससे कोई खास फायदा नहीं होने वाला। पहली बात तो यह कि पेड़ों को रोपने के बाद उन्हें राम भरोसे छोड़ दिया जाता है इसलिए जितने पेड़ लगाए जाते हैं, उतने बचते नहीं। वे या तो पानी बगैर सूख जाते हैं या उन्हें मवेशी चर जाते हैं। दूसरी बात यह कि जो पेड़ बच जाते हैं, उन्हें तैयार होने में कई-कई साल लग जाते हैं। और तीसरी बात यह कि आम, महुआ, नीम, पीपल, जामुन, इमली और बरगद, पाकड़ जैसे बड़े, छायादार और फलदार पेड़ों को काटकर उनकी जगह बेर, कनेर, जंगली बबूल और यूकेलिप्टिस जैसे बेकार, अनुपयोगी किस्म के पेड़ लगाए जा रहे हैं। इन पेड़ों से न तो फल मिलता है, न छाया मिलती है और न ही हवा का प्रदूषण कम हो पाता है।" दादी ने कहा।

अभी एकता और दादी की बातचीत चल ही रही थी कि तभी दादी को दवाई खिलाने के लिए एकता की मम्मी आ गईं। "अरी एकता, इतनी देर से तू क्या बकबक लगाए है और दादी को परेशान किए जा रही है। देखती नहीं कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। चल हट यहाँ से। अब दादी को आराम करने दे।" मम्मी ने कहा और दादी को दवाई खिलाने के बाद एकता को अपने साथ लेकर चली गईं।

दादी तो दवाई खाकर लेट गईं, लेकिन एकता ने अपने कमरे में आकर कंप्यूटर ऑन किया, नेट खोला और गूगल पर लिखा—"वायु प्रदूषण दूर करने के आसान उपाय।" उसके बाद उसने सर्च के आइकॉन पर कर्सर ले जाकर क्लिक कर दिया। फिर तो गूगल जी वायु प्रदूषण दूर करने के जो-जो उपाय बताते गए एकता एक कागज पर लिखती गई।

शाम के समय दादी के जागते ही एकता भागी-भागी उनके पास गई और उनसे लिपटते हुए बोली—"दादी, मैंने अशुद्ध हवा को शुद्ध करने का तरीका पता कर लिया है। मैं अपने घर की हवा शुद्ध कर दूँगी, लेकिन आपको गाँव नहीं जाने दूँगी।"

"अच्छा....हवा शुद्ध करने का क्या तरीका ढूँढ़ा है तुमने? बता तो जरा।" दादी ने हँसते हुए कहा।



"देखिए दादी, गूगल ने बताया है कि नीम का पेड़ अशुद्ध हवा को तेजी से शुद्ध करता है। इसके अलावा तुलसी, एलोबेरा, मनीप्लांट, रबर तथा लिली के पौधों से भी अशुद्ध हवा शुद्ध होती है। मैं इतवार के दिन पापा के साथ नर्सरी जाऊँगी और पूरे 20 गमले तथा इन सारी चीजों के पौधे ले आऊँगी। नीम का पेड़ तो मैं बाहर लॉन में लगा दूँगी और उसे रोज सवेरे पानी देती रहूँगी। उसके बाद चार-चार गमलों में तुलसी, एलोबेरा, मनीप्लांट, रबर तथा लिली के पौधे लगाऊँगी। इन सारे गमलों को मैं बाहर के बरामदे और कमरों में दरवाजों के पास रख दूँगी। फिर देखिएगा शहर की हवा भले न शुद्ध हो, हमारे घर की हवा तो शुद्ध हो ही जाएगी।"

"अरी वाह, मेरी रानी बिटिया तो बहुत सयानी है भाई। इसको छोड़कर कहीं नहीं जाने वाली मैं।" दादी ने कहा और एकता को अपनी गोद में समेट लिया।



दादी के गाँव में



एकता बहुत खुश थी। वह पूरे छह वर्षों के बाद अपनी दादी के साथ गाँव जा रही थी। पहले जब तक दादा जी जीवित थे, वह अपनी मम्मी और पापा के साथ साल में दो बार बड़े दिनों की छुट्टियों तथा गर्मी की छुट्टियों में गाँव अवश्य जाती थी। लेकिन दादा जी के देहांत के बाद दादी जी ही गाँव से आकर उन लोगों के साथ ही रहने लगी थीं इसलिए उसका गाँव का आना-जाना बंद हो गया। बस दादी जी हर चार, छह महीनों के बाद एक बार कुछ दिनों के लिए गाँव हो आती थीं। एकता हर बार दादी के साथ गाँव जाने के लिए कहती, लेकिन मम्मी नहीं जाने देती थीं। दादी जी भी यह कहकर साथ ले जाने से मना कर देती थीं कि–"तू अभी बच्ची है, बगैर मम्मी के नहीं रह पाएगी। गाँव जाने के दूसरे ही दिन वापस आने के लिए रोने लगेगी तो मेरे लिए मुसीबत हो जाएगी।" एकता मन मसोस कर रह जाती थी।

लेकिन अब छह सालों में एकता बड़ी हो गई है। इस बार एकता ने दादी के साथ गाँव जाने के लिए जिद पकड़ ली तो मम्मी, पापा ने भी हाँ कर दी और दादी भी उसको साथ ले जाने को तैयार हो गईं। पहले ट्रेन तथा उसके बाद मोटर से यात्रा करने के बाद जब वह अपने गाँव के बस अड्डे पर उतरी तो वहाँ मोटरों और जीपों की भीड़ तथा चहल-पहल देखकर हैरान रह गई। "दादी, पहले तो ये दुकानें नहीं थीं। इस जगह शायद पेड़ थे। और यहाँ पर भीड़ भी इतनी नहीं रहा करती थी।" एकता ने एक लाइन से बनी पक्की दुकानों तथा वहाँ एकत्र भीड़ को देखकर कहा।

"हाँ बेटी, ठीक कहा तुमने। पहले यहाँ पर पीपल के तीन पुराने पेड़ थे जिनके चारों ओर गोल पक्का चबूतरा बना हुआ था। लोग उन्हीं चबूतरों पर बैठकर बसों का इंतजार किया करते थे। अब उन पेड़ों को काटकर दुकानें बना ली हैं लोगों ने।" दादी ने बताया।

बस अड्डे से घर के रास्ते में एक पुलिया पड़ती थी। पहले पुलिया के दोनों तरफ पानी और जलकुंभी से भरे दो तालाब थे। दोनों तालाब पुलिया के नीचे से आपस में मिले हुए थे। एकता ने देखा कि वे दोनों तालाब गायब थे। उनकी जगह मकान बन गए थे। "दादी, मुझको ऐसा याद आ रहा है कि इस पुलिया के दोनों ओर तालाब थे। उनमें सिंघाड़े बोए जाते थे।" एकता ने फिर पूछा।

"हाँ बेटी, तुम सही कह रही हो। पहले यहाँ दो तालाब थे जो बरसात के दिनों में लबालब भर जाते थे। अब उन तालाबों को पाटकर लोगों ने घर बना लिए हैं।" दादी ने बताया।

घर पहुँचते-पहुँचते दादी और पोती दोनों थक चुकी थीं। "बेटी, पहले हैंडपंप से पानी निकालो तो हाथ-मुँह धोया जाए।" बरामदे में रखी चौकी पर बैठते हुए दादी ने कहा।

एकता बाल्टी लेकर आँगन में लगे हैंडपंप से पानी लेने गई तो पता चला कि हैंडपंप से तो पानी ही नहीं निकल रहा है। ऐसा पहली बार हुआ था जब कि हैंडपंप का पानी सूख गया था। दादी ने पड़ोस के हरी काका को बुलवाया। वह अपने घर से बाल्टी भरकर पानी ले आए और हैंडिल के पास बने छेद से पाइप के अंदर पानी डालकर हैंडिल चलाने लगे। लेकिन बहुत कोशिशों के बाद भी हैंडपंप से पानी नहीं निकला। आखिर बाजार से मिस्त्री को बुलवाया गया। मिस्त्री ने बताया कि जमीन में पानी का स्तर नीचे चले जाने के कारण हैंडपंप बेकार हो गया है। अब पानी के लिए और भी अधिक गहराई तक बोरिंग करनी पड़ेगी। अगले दो दिनों तक पुराने हैंडपंप को उखाड़कर, उसमें और पाइप जोड़कर फिर से बोरिंग की गई तब जाकर पानी आया।

अगले दिन सवेरे एकता घर के बाहरी बरामदे में बैठी एक पत्रिका पढ़ रही थी। उसने देखा कि पड़ोस वाले घर के दरवाजे पर खड़ी लगभग उसी की उम्र की एक लड़की उसकी तरफ देख रही थी। एकता ने पत्रिका बंद की और उसके पास चली गई।



"तुम शीला हो न?" एकता ने पूछा।

"हाँ....।" उस लड़की ने उत्तर दिया।

"तुम्हें याद है.....पहले जब मैं गाँव आती थी तो हम लोग साथ-साथ खेला करती थीं।" एकता बोली।

"हाँ....मुझको खूब अच्छे से याद है।" शीला ने कहा।

"तो फिर आओ मेरे घर। मुहल्ले के और साथियों को भी बुला लो। चलो फिर से खेल जमाते हैं।" एकता ने कहा। सुनते ही शीला बिजली की तरह पूरे मुहल्ले में दौड़ गई और आधे घंटे के अंदर ही सात बच्चे एकता के घर में इकट्ठे हो गए।

एकता इस बार अपने साथ कई बाल पत्रिकाएँ तथा कविता, कहानियों की कई किताबें लेकर आई थी। फिर तो रोज सवेरे मुहल्ले के सारे बच्चे एकता के घर आ जाते और साथ-साथ खेलते, बतियाते तथा एकता की कविता, कहानी की किताबें पढ़ते थे।

दादी के आने की खबर सुनी तो गाँव के लोग उनसे मिलने के लिए आने लगे। एक दिन एकता के पापा के पुराने दोस्त त्रिपाठी जी जो स्कूल में अध्यापक थे, दादी का हालचाल लेने के लिए आए।



"चाची जी, पता चला था कि वहाँ गाजियाबाद में आपकी तबीयत खराब हो गई थी। क्या हो गया था आपको?" त्रिपाठी जी ने दादी से पूछा।

"अरे पूछो मत बेटा, गाजियाबाद की हवा तो इतनी खराब हो चुकी है कि वहाँ साँस लेना भी मुश्किल है।" दादी बोलीं।

"हाँ, ठीक कह रही हैं आप। सभी बड़े शहरों की हवा जहरीली होती जा रही है। दिल्ली में तो सुना है ऑक्सीजन का सिलिंडर भी बिकने लगा है।" त्रिपाठी जी ने कहा।

"ऐसा क्यों हो रहा है अंकल?" पास ही बैठी एकता ने पूछ लिया।

"इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारे वायुमंडल में शुद्ध हवा कम होती जा रही है तथा

अशुद्ध हवा की मात्रा बढ़ती जा रही है। बात यह है एकता कि पेड़-पौधे अशुद्ध हवा को शुद्ध करने का काम करते हैं। लेकिन पेड़ों की बेहिसाब कटाई के कारण हमारे वायुमंडल में शुद्ध और अशुद्ध हवा का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। सिर्फ शहर ही नहीं, यदि जाँच की जाए तो हमारे गाँव की हवा भी बहुत अच्छी नहीं मिलेगी। तुमने देखा होगा कि गाँव में भी बहुत सारे पुराने पेड़ काट दिए गए हैं।"

"हाँ अंकल, गाँव में पहले कितने सारे पेड़ थे, आम, जामुन के बगीचे थे लेकिन अब तो चारों ओर खाली मैदान-सा नजर आ रहा है।" एकता बोली।

एकता के घर में एकत्र सारे बच्चे त्रिपाठी जी के पास आ गए।

"देखो बच्चों, हम लोगों का समय तो जैसे-तैसे कट जाएगा, लेकिन तुम लोगों के सामने बहुत बड़ी मुश्किल आने वाली है। अगर यही हाल रहा तो आने वाले समय में न तो शुद्ध हवा मिलेगी और न ही शुद्ध पानी। अगर स्वस्थ और सुखी रहना है तो हवा तथा पानी दोनों चीजों को बचाना बहुत जरूरी है।" त्रिपाठी जी ने वहाँ उपस्थित सभी बच्चों से कहा।

"यह काम कैसे होगा अंकल?" शीला के भाई मोहन ने पूछा।

"हवा को बचाने के लिए तो हमें अधिक-से-अधिक छायादार पेड़ लगाने होंगे और पानी को बचाने के लिए बरसात के पानी को जमीन के अंदर भेजना होगा।"

"अंकल, पेड़ लगाने वाली बात तो समझ में आ रही है, लेकिन पानी वाली बात हमारी समझ में नहीं आई।" शीला बोली।

"तुम लोग देख रहे हो कि हैंडपंप, कुआँ और ट्यूब-वेल आदि के द्वारा रोज करोड़ों लीटर पानी धरती के अंदर से निकाला जा रहा है। ऐसे में अगर वापस धरती के अंदर पानी न भेजा जाए तो एक दिन ऐसा भी तो आ सकता है जब धरती के अंदर का सारा पानी समाप्त हो जाए।"

"हाँ अंकल, आपकी बात सही है। लेकिन पानी को धरती के अंदर वापस कैसे भेजा जा सकता है?" एकता बोली।



"मैं बताता हूँ। देखो, पक्की सड़कों और नालियों में बहने वाला पानी तो बेकार चला जाता है, लेकिन तालाबों, पोखरों और गड्ढों में जो पानी एकत्र होता है, वह धीरे-धीरे रिस-रिस कर जमीन के अंदर चला जाता है। जिस प्रकार धरती पर जितने अधिक संख्या में पेड़ होंगे, उतनी ही अधिक मात्रा में हवा शुद्ध होगी। ठीक उसी प्रकार जितने अधिक तालाब, पोखर होंगे, उतना ही अधिक पानी धरती के अंदर वापस जाएगा।" त्रिपाठी जी ने बताया।

"तुम ठीक कह रहे हो बेटा। तभी तो पहले के जमाने में लोग जगह-जगह तालाब और पोखर खुदवाते थे। लेकिन आजकल लोग तालाबों, पोखरों को पाटते जा रहे हैं। इसीलिए धरती के नीचे का पानी सूखता जा रहा है।" दादी बोलीं।

"अब समझ में आया अंकल कि हमारे आँगन में लगा हैंडपंप क्यों सूख गया था। मिस्त्री जी भी उस दिन कह रहे थे कि पानी का लेवल काफी नीचे चला गया है।" एकता बोली।

"अगर समझ में आ गई मेरी बात तो तुम लोग आस-पास के खाली जगहों में पेड़ लगाने का संकल्प करो। हर कोई अगर एक-एक पेड़ लगाए तो भी बहुत हो जाएगा। जानते हो पेड़ वायुमंडल की हवा तो शुद्ध करते ही हैं, साथ ही बादलों को रोककर बारिश भी कराते हैं।" त्रिपाठी जी ने कहा।

"ठीक है अंकल, हम सभी लोग एक-एक पेड़ जरूर लगाएँगे।" शीला बोली।

"लेकिन ध्यान रहे, भले ही संख्या में कम पेड़ लगाना, लेकिन आम, महुआ, नीम, पीपल, जामुन, बरगद आदि के छायादार पेड़ ही लगाना। यह नहीं कि गिनती के लिए यूकेलिप्टिस या जंगली बबूल के पेड़ लगा दो।"

"और धरती के अंदर पानी वापस भेजने के लिए क्या करना होगा अंकल?" एकता ने पूछा।

"देखो, तालाब खोदना तो तुम लोगों के वश में है नहीं, हाँ तुम लोग एक काम जरूर कर सकते हो कि पानी की बरबादी को रोको। जैसे हमारे पास चाहे जितना भी अधिक पैसा हो, खर्च हम अपनी जरूरत के अनुसार ही करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमें जरूरत से अधिक पानी नहीं गिराना चाहिए। जानते हो, पानी सबसे अधिक कीमती चीज है। खाना के बगैर तो हम जिंदा रह सकते हैं, लेकिन पानी के बिना जिंदा रहना संभव नहीं है। बोलो क्या समझे?"

"हम समझ गए अंकल कि हमें पेड़ लगाना है और पानी बचाना है।" सारे बच्चे एक साथ बोल पड़े।

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' (19 दिसंबर 1956, बलिया) बच्चों के चर्चित लेखक हैं। उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं - खीर का पेड़, फौजी का बेटा, बहादुर टीपू, बंटी का कंप्यूटर, बीनू की डायरी, एक पते की बात, देश हमारा, बिल्ली की भक्ति, बढ़े चलो आदि। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे - सोहनलाल द्विवेदी सर्जना पुरस्कार, भारतेन्दु पुरस्कार, राम सिंहासन सहाय मधुर पुरस्कार, भूपनारायण दीक्षित पुरस्कार आदि।

सौम्या शुक्ला ने नेशनल स्कूल ऑफ फैशन टेक्नालॉजी, मुंबई से स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के साथ 'रियाज ऐकेडमी, भोपाल' से बच्चों की पुस्तकों के चित्रांकन का प्रशिक्षण लिया है। वे बचपन से ही चित्रांकन कर रही हैं।

